

## भावानुवादक सूक्ष्म अंतर्दृष्टि

अम्बिका कुमारी

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा

अनुवाद एक कला थिक, जकरा माध्यममे एक भाषाक शब्दार्थकेँ दोसर भाषाक शब्द समझ द्वारा अभिव्यक्त कयल जाइत अछि, मुदा प्रत्येक भाषाक एक सांस्कृतिक क्षेत्र होइत अछि, जकर प्रतिनिधित्व ओ भाषा करैत अछि। तैँ स्वभावतः एक भाषाक शब्दकेँ ओकर निहितार्थ सहित दोसर भाषामे अभिव्यक्त करब सर्वथा कठिन होइत अछि। एहेन कारण अछि जे एक भाषाक शब्द द्वारा अभिव्यक्त कोनो मूल भावकेँ दोसर भाषाक शब्दमे अन्तरित करबाक लेल ई आवश्यक नहि जे ओ मूलभाव अपन समस्त सौन्दर्यक संग दोसर भाषामे अभिव्यक्त भऽजाय, तइओ अनुवादक मूल भावक अत्यन्त निकट धरि दोसर भाषाकेँ प्रकट करबाक धरि अनुवादक अपना सीमा बुझैत छथि। अनुवादक सफलता एहि तथ्यपर आधारित रहैछ जे एक भाषाक शब्दार्थ कोन हद धरि भाषाक निहितार्थकेँ दोसर भाषामे अभिव्यक्त कऽ पबैत छथि।<sup>1</sup>

अनुवादक प्रक्रिया कायान्तरणक दृश्य अछि, जाहिमे भाषा तऽ अलग-अलग रहैछ मुदा अभिव्यक्त अर्थ एवं वाक्य भंगिमा समान भऽ जाइत अछि। देह दूटा रहितो आत्मा एकहि भऽ जाइत अछि।

वास्तविकता ई अछि जे अनुवाद एक कोठी केर धान दोसर कोठीमे रखबाक जकाँ होइत अछि। जखने एक कोठीक धान दोसर कोठीमे ढारल जाइत अछि, ताहि काल किछु-ने-किछु अन्नक दाना छिटा जेबाक संभावना रहैत अछि, ठीक ओहिना एक भाषाक शब्दार्थकेँ दोसर भाषा शब्दार्थमे अभिव्यक्त करबा काल ओकर अर्थ निष्पत्ति, अलंकार-योजना, व्यंग्यार्थ आदिकेँ किछु-ने-किछु छिटा जायब स्वाभाविक अछि। ई छिटायब जतेक कम होइछ, अनुवादक सफलता ओहिपर निर्भर करैत अछि।<sup>2</sup>

अनुवादककेँ वाक्यार्थपर विशेष धेयान देबऽ पड़ैत अछि। ओ वाक्यमे प्रयुक्त शब्द सभक संचालन एवं सुनियोजन एहि तरहसँ करबाक लेल बाध्य होइत अछि जाहिसँ मूल भाषाक भावार्थ सम्पूर्णतामे दोसर भाषामे स्थापित होइ। डॉ. महेन्द्र नारायण राम, कोंकणी उपन्यास “कार्मेलीन” करे मैथिली अनुवाद करबामे एहि दृष्टिसँ सफलता पाओलनि अछि। जनतब ई जे एहि पोथीपर साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार वर्ष 2012मे डॉ. रामकेँ प्रदान कयल गेल अछि। एकर सफलताक प्रयास और की भऽ सकैत अछि।

एहिसँ संदर्भित किछु विमर्शकेँ केन्द्रमे राखि बात करी तऽ पबैत छी जे मैथिली भाषामे अनुवाद करबा काल डॉ. राम ई अनुभव कयलनि जे एहि भाषामे आदरसूचक एवं अनादरसूचक भावक प्रकटीकरण हेतु क्रियापद केर जे जटिलता अछि, ओहिपर बिना ध्यान देने अर्थक अनर्थ भऽ सकैत अछि। तैँ एहि क्रमकेँ सुनियोजित करबाक हेतु अत्यंत सावधानीक जरूरति अछि। जेना निम्न पाँति देखल जा सकैत अछि-

“अनचोकहि कार्मेलीन बेटाकेँ कोरामे उठा लेलनि। मायक हाथक स्पर्श पबितहि बालक कानऽ लागल। कार्मेलीन, तइपि कऽ रहि गेलीह। कतेक अन्याय कयलहुँ, हम एहि जनमौटीपर। कार्मेलीन ओकरा छातीसँ लगा लेलनि। एकरा आब दुलार करब, आखिर अछि तऽ अपने हिस्सा। ओ स्तनकेँ ओकरा मुँहमे लगा लेलनि आ पियाबऽ लगलीह।”

कतोक ठाम ओ ई अनुभूति कयलनि जे मूल भाषाक शब्दावली लेल मैथिलीमे अर्थ निष्पत्ति हेतु ओकर स्थानापन्न शब्द प्रयोग केने बिना मार्मिक अर्थ नहि आबि सकैछ। तैं मूल शब्दकेँ अनुवादमे राखब श्रेयस्कर होइछ। जेना 'ब्रेसियर'<sup>5</sup> ई शब्दकेँ देखल जा सकैत अछि। एकरा लेल मैथिलीमे एकटा शब्द अछि- 'आंगी'। मुदा आंगीमे ओतेक तीक्ष्णताक अभाव देखाइ पड़ैछ जतेक 'ब्रेसियरमे'। तैं मूल शब्दे (ब्रेसियरे) के अनुवादमे राखल गेल अछि।

एहिना मैथिली क्षेत्रमे विवाहक अवसरपर अनेक राग-भासाक तंग विभिन्न तरहक गीत गयबाक प्रचलन अछि। ई गीत सेहो मैथिली संस्कार पक्षक एक नियामक तत्व मानल जाइत अछि। तइओ एहन अवसरादिपर स्तुतिपरक गीतमे कुल देवता किंवा ब्रह्म गीत प्राधान्य रहैत अछि, लैटिन, 'लावदाति' हेतु कुल देवता गीत किंवा ब्रह्म गीत कहि देने मूल लेखकक भाव प्रक्षेपित नहि भऽ सकैत छल, तैं ओकरा ओहि गीतकेँ मूल नामसँ अथवा मूल रूपमे राखऽ पड़लनि। जेना-

लावदाति दोमिने ओमने जेंतीस

लावदाति ओमने पोपलीस

कोन्या को प्रीमीति.....।<sup>6</sup>

एहि तरहँ अनेक ठाम एकर पालन करबा आवश्यक छल।

डॉ. राम इहो अनुभव कयलनि जे अनुवादककेँ अपन भाषाक क्षेत्रक सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, आर्थिक, राजनैतिक संदर्भित विषयक परिज्ञान तऽ हेबाक चाही, संगहि मूल भाषा क्षेत्रमे तद्धित अर्थ निष्पन्न करवला शब्द जैं नहि भेटैत अछि, तऽ संदर्भ द्वारा अथवा मूल रूपमे प्रश्रय दऽ कऽ अर्थाभिव्यक्ति करब समुचित अछि।

मैथिलीमे "दुर्वाक्षत देव" एक विशिष्ट सांस्कृतिक अनुष्ठान अछि। एहिमे 'वर' एवं 'कन्या' केर देहपर दूमि आ अक्षत मंत्रोचारक उपरांत छींटल जेबाक परंपरा अछि। मुदा जैं कयो एकर अनुदित अर्थ माग दूमि एवं अक्षत प्रदान करब" लगाबैछ तऽ अर्थक समुचित अभिव्यंजन करबनो संभव नहि हयत एवं ओ अनुवाद सफल नहि मानल जाएत। तैं अनुवादककेँ मूल भाषामे प्रयुक्त लोकोक्ति, मोहावरा, वक्रोक्ति आदिक अनुवादमे अत्यंत साकांक्ष रहऽ पड़ैत छैक।

एहि ठाम डॉ. महेन्द्र नारायण रामक द्वारा कयल गेल कोंकणीक कार्मेलीनसँ मैथिलीक 'कार्मेलीन'क अनुवादकेँ सभक सोझा राखब हमर अमीष्ठ अछि। आ ई अमीष्ठ एहि अनुभूतिकेँ पुष्ट करैत जे मैथिली ओ कोंकणी भाषा मादे होयबे करइत-दुनूक साम्यता संस्कृति, साहित्य ओ जनजीवनक भावकेँ पुष्ट करैत अछि। यथा- कार्मेलीनकेँ धीरज बन्हाबऽ लेल कोनो गोवाकेर जनीजाति हो तऽ नीक रहत.... नोरिया हृदयमे सोचलनि। मोन पड़ि गेलनि..... सलीमा केर ओहिठाम, मुदा ओ गोवा केर अछि अथवा मलबारी? तुरत फोन घुमौलनि। सालीमाये लेने छल।

"जी हँ! अछि तऽ ओ गोवा केरे.... नाम.... आंदारीत"

नोरिया जाकऽ कार्मेलीनसँ पुछलनि- "साल मियामे सलीमाकेर ओहिठाम 'आंदारीत' बहिकरनी अछि, तों ओकरा चिन्हैत छिहीन?"

आंदारीत? हँ! 'आंद्रीता' हयत। कोनो खास पहिचान तऽ नहि, मुदा ओकरा जनैत छी।

"जी, जनैत छी" कार्मेलीन।

“हम ओकरा बजबैत छी, तौ ओकरा संग हृदय खोलिकऽ गप्प करऽ सकबिहीन”, उत्तरक चिन्ता नहि कऽ नोरिया फोन करऽ गेलीह।

आंद्रीता ओहिना कनैत-खिजैत एलीह जेना कि गोआमे होइत अछि। “हाय दैया हे गै तोरा जूजाकँ उठा लऽ गेलौक, हे गै तोहर पति... हाय हमर बहिनकेँ किएक छोड़ि गेल... तोहर आधार...SS हाय दैयाSS रे!”

कार्मेलीन सेहो दू मिनट धरि कानलीह। आंद्रीत आब सेहो कनैत चलि आबि रहल छलीह... मुदा आब बर्दाश्त नहि कऽ सकलीह... बजलीह-

“छाती नहि पीटब... आंद्रीता... किएक बोम फाड़ि रहल ही...”

आंद्रीता किछु लरम सन पड़ि गेलीह। कार्मेलीनकेँ पश्चाताप भेलनि, एहेन कहब ठीक नहि छल, “अधलाह नहि मान आंद्रीता। एहिठाम वलाकै एहि तरहँ काँनलासँ नफरत अछि। ओ अधलाह मानैत अछि, ओ नाराज नहि भऽ जाय, तौ।”

आंद्रीता चुप भऽ गेलीह। मुदा ठोर चलिते रहल, “आब तोहर के अछि... कोना हयत?... ओ एहेन जवानीमे किएक चलि बसल? ओ कनैत-कनैत कार्मेलीनकेर गर्दनमे हाथ राखिकऽ बजलीह... कतेक भला आदमी छल? भगवान सेहो भला आदमीके बेसी चाहैत अछि... अचानक उठाकऽ लऽ जाइत अछि... एखन जवाने तऽ छल... हाऽऽऽय...”

“तौ ओकरा जनैत छिहीन?” गर्दन छोड़बैत कार्मेलीन।

“एहेन बात नहि... मुदा”

“ओकरा बारेमे हम तोरासँ कहियो किछु नहि कहने छियो! की कहने छियो कहियो?”

“हम कहिया कहलहुँ... एहेन कहने छलहुँ? हमर ई तऽ अंदाज... तोरा देखि कऽ... तो कतेक नीक?..... तखन तोहर घरवाला सेहो.....”

आंद्रीताक विचार सुनि कार्मेलीन बुझि नहि पाबि रहल छलीह- हँसू अथवा कानू। नोरिया बाजऽ लगलीह जे आंद्रीताके बजबैत छी तऽ हमहुँ सोचलहुँ... चलू। नीके भेल। ओकरासँ विचारि कऽ किछु निर्णय कऽ ली। दूनूक विचारसँ जे तय हयत... नीके हयत। मुदा ई बेमतलबक बकवासमे समयइए बर्बाद कयलहुँ...।

जाय दहीन... आंद्रीता। ई तऽ बता... काल्हि टेलिग्राम आयल अछि... मुदा गोवा जायब ठीक रहत कि नहि?

किछु सुनलाक बाद गंभीर भऽकऽ आंद्रीता परामर्श देलनि... “जायब तऽ नीक रहत? मुदा किएक।”

“जाकऽ करी तऽ की करी... बुझा नहि पड़ैछ...” कार्मेलीन बजलीह।

“ठीक तऽ अछि, हेबो करत तऽ की हयत? आब ओ जीवित तऽ भऽ नहि सकैछ...”

हमरा लगैत अछि... जेबाक चाही... कमसँ-कम अपन बेटी बेलिन्दाक लेल...

ओ बेचारी याद करैत हएत...।

“ई तऽ विल्कुल ठीक कहलें तो!! ओकरो लेल तऽ तोहर जेनाइ नीके हएत। आब तोहर...”

“अप्रैलमे जाय चाहैत छलीह। मुदा एखन दस मास अछि... आओर आव जाइ तऽ सेहो एतेक सहज नहि... खर्च किछु कम तऽ नहि...”

एहिएर कार्मेलीनक माथक झुरीं गिनकऽ अपन माथे दुगुना बल करैत आंद्रीता बजली, “से तऽ अछिए। आयब-जायबमे तीन हज़ारसँ कम नहि उड़ि जायत... सोचू आ निर्णय लिअऽ!”<sup>7</sup>

ई अंश सेहो द्रष्टव्य-

सम्पूर्ण गाममे सनसनी आओर सन्नाटा पसरि गेलोपर एहि घरमे हँसी-मज़ाकक प्रकाश मौजूद छल। टायफॉयडक तांडव गाम भरिमे शोर मचा देने छल। जाहि कोठापर ओकर छाँह पड़ै, ओहिठाम पानि बडवला धरि क्यो बाँचि नहि पबैत, बीसो कोठा उजड़ि गेल छलैक। बचल-खुजल मुट्ठी भरि कोठा भयभीत, कबरमे पैर लटकौलासँ, मजबूत भडकऽ प्रतीक्षा कऽ रहल छल-मृत्युक.....

मुदा मृत्युक भय होइत अछि बड़ बुजुर्गक लेल, नेनाकैक ओहिसँ कोन वास्ता? एहि घरक दूनू बच्चा तितलीजकों नचैत रहैछ। ओएह छलैक जे घरक पैघकँ-माय-बापकँ किछुओ समयक लेल किएक नहि हो- अपन भय बिसरि देबाक लेल बाध्य करैछ। बच्चा खेलैत-कूदैत, रुसैत-झगरैत, फेर एक भऽ जाइछ, फेर थकानसँ चूर भडकऽ सूति जाइछ।

बड़-बुजुर्गकँ नीन कतऽ? मौतक डेराओन सूरतिक कल्पनासँ हुनक चेहरा सभक रंग, उड़ि जाइत छल, प्रत्येक दिन चारि-पाँच अर्थी उठल करैछ- मरघटमे दू गज जमीन दफनाबऽ लेल नहि भेटैत छल। पड़ोसी तऽ दूरक बात, सर-कुटुम्ब धरि रोगीक पूछारि करबाक लेल आयल नहि रहैत छल। ज्वर चढ़िते रोगी आओर घरक लोग जकर प्रतीक्षामे रहैत छलैक-ओ छल मृत्यु। होइछ तखन अन्तिम संस्कारक समस्या हृदयकँ खाय लगैछ: मौत के करय? के आगाँ आबय? चारि-पाँच पुरब कठिन। सम्पूर्णगामक आधार छल तऽ पादरी मानुएलक। ओ गिरजाक पादरी छल। एक ओएटा छल जे पहिनहिसँ आगाँ बड़ि कऽ तमाम लोग सभकँ धीरज बन्हौने छल, प्रार्थनासभसँ नहि अपितु प्रत्यक्ष काज कऽ के, अपन कृतिसभसँ। मडगाँव ओएह जायल करैत छल, बैद्यजीसँ दवाइ आनि कऽ रोगीकँ अपना हाथ पीया दैछ, रोगीकँ देवतासन लगैछ, एतेक प्यार दैछ। कतौ-कतौ तऽ दैवी चमत्कार जकाँ ओकर सेवा-सुसुर्षासँ रोगी मृत्युक मुँहसँ बाँचि जाइछ। मुदा विकराल काल एकरा किएक सहय लागय..... एक दिन पादरीकँ सेहो छूत लागि गेल। ओकर पूछारि करऽ आदमी तऽ की, चिड़ैक पूत धरि नहि पहुँचैल। हैं! हरिजन महल्लाक दूगो युवक पादरी कँ खूब सेवा कयलनि, देखभाल कयलनि। मुदा बेचारा मृत्युक मुँहसँ नहि बाँचि सकल। पादरीके चलि बसलापर गामभरिमे मृत्युक जाल आओरो मजबूत भऽ गेल। डरक मारे दोसर कोनो पादरी गाममे एबाक दुःसाहस नहि करैत छल। लगपासक गामसभसँ केओ फटकैत नहि छल। मौतक घंटी बजाबऽवला गिरजाक नौकर सेहो बुखारक शिकार भऽ गेल छल। चारु भर सनसनी, बेचैनी आओर घबड़ाहटिक तांडव छायल छल। एहि तरह अकस्मात आसमानक कुल्हड़ि गिरजापर गामक नेना सभपर असरि नहि भेल, एहन बात नहि। मुदा केकरो डाँट-फटकारक भय नहि छल। ओ खेलैकूदमे व्यस्त रहैत छल।

ओहि दिन भिनसरे उठिते आने दिन जकाँ नेनासभकैक चाय आओर एक-एकटा टोस्ट देल गेल।

“माय, हमरा डबल रोटी”, कार्मेलीन जिद केलक।<sup>8</sup>

विवाह-स्मरण कार्मेलीनक ओ सेहो भेल। हुनक बाबू सेहो चिन्तित रहलाह। मुदा तकर अनुभव निम्न पाँतिसँ कयल जा सकैत अछि-

बाबू पहिले बेर बाहर निकललाह कार्मेलीनक लेल नीकसन वर खोजि निकालबाक गरजेसँ। घरमे किछु नहि बतौलनि, कार्मेलीनके सेहो बादमे मालूम पड़लैक।

जखन कखनो ककरोसँ बाबू जा भेटैछ, ओकरेसँ कार्मेलीनक बात सुनबऽ लगैत। ओ ओकर बखान करैत थकैत नहि छलाह। ओकर रूपक प्रशंसा आओर गुणक बखान जकरासँ भेटैछ, कहि सुनावैत। कहैत-कोनो नीक सन वर कतौ होइ तऽ बतायब।

आग्रेक अफ्रीका पहुँच चुकल छलाह आओर धीरे धीरे कार्मेलीनक दुःख सेहो घटैत गेल। घाव तऽ भरि गेल, मुदा निशान छोड़ि गेल, जे कहियो मिटा नहि सकैत छल।

कार्मेलीन आब किछु गंभीर-सन रहऽ लागल छलीह! मायके लगलनि जे ओ विवेकशील भऽ गेलीह अछि, बाबू बुझैत छलाह जे ओ बिआहक लेल तरणि रहल अछि। सत्य तऽ ई छल जे कार्मेलीन दिन भरि जी-तोड़ि काज करैछ आओर थाकि गेलापर जेना घोड़ा बेचिकऽ खड़ पारि सुति जाइत, जे ओ चाहितो छलीह।

एक दिन बाबू छेड़लनि

“बेटी कार्मेलीन...।”

“बाबू।

“तोरा बारमे बात कऽ आयल छी।”

कार्मेलीन भौचक्की-सन-रहि गेली। बिआहक बारमे ओ तऽ सपनामे सेहो नहि सोचने छली। “उतठ्ठा गामक वर अछि... एतय मोजोडोकपरले कछेरपर। लोहाक खदानमे नोकरी करैत अछि, बाप छोट-मोट जमींदार छल कामिल साँवियार-आब संसार छोड़ि चुकल अछि। हमर जान पहिचान छल। बड़ भला आदमी छल। आखिर वरो कोनो कम अछि?”

ई समझि जे कार्मेलीन सब किछु सुनि रहल अछि, बाबू कहिते चलि जा रहल छलाह। कार्मेलीन सोचि रहल छलीह जे कोन रुपें इनकार करी। फेर ओकरे मन ओकरेसँ पूँछैत रहल- “बिआह नहि करब? तऽ की कुमारीये रहब-बिन बिआहली? एकटा अनुभव पाबि चुकली... की इएह अधिक नहि अछि? कियेकि दोबारा अपन दिल तोड़बऽ चाहैत छी?”<sup>9</sup>

समय संग समस्या आ औरोदा सेहो लोककें बेबस कऽ दैत अछि, से कार्मेलीनक सभ सेहो भेल। तकर नमूना नीचाँ देखल जा सकैत अछि-

तेसर दिन कार्मेलीनकें बुखार नहि रहल। तीनु दिन ओ बच्चाकें अलग नहि होमऽ देने छलीह। छातीसँ लगौने रहलीह। गुह-मूत धरि साफ करैत रहलीह। ऊबि नहि गेलीह। इजाबेलकें अबितहि अनिच्छायेसँ ओ वात्सल्यक नीक प्रदर्शन कराने छल। फेर ओकरा चलि गेलापर बच्चाक संग कयल अन्यायपर पछताइत अपनहि गालपर-थापड़ जड़ैत रहलीह। आब एकर बाद बच्चाकें जीर-जनासँ प्यार करत, ओकर खुराकक पूरा-पूरा ध्यान राखत। ओ मनहि-मन एक निश्चय कऽ रहल छलीह।

दूपहरक खेलाक बाद सदिखन जकाँ इजाबेल पुछारि करऽ एलीह। कार्मेलीन झपकी-सन लऽ रहल छलीह। ओकरा उठैत देखि इजाबेल बजलीह, “तों सुति जो... हम बादमे आयब।”

“नहि, नहि, आबि जो तों। आब हम ठीक छी।” सच तऽ ई छल जे कार्मेलीन ओघऽ लागल छलीह।

इजाबेल बजली “झूठ तोहर तऽ आँखिये बता रहल अछि। पलक भारी लागि रहल अछि।”

कार्मेलीन मुस्कुराइलीह, “हैं, नीन तऽ आबि रहल अछि, मुदा बुखार नहि अछि।” ई नीके अछि आब जल्दीये ठीक भऽ जायत, उठैत इजाबेल बजलीह, “तों आखम कर बच्चाकेँ हम संगमे लऽ चलैत छीं।” कार्मेलीन कोनो बाधा नहि डाललीह। ओहि दिन इंकार कऽकेँ ओ नीक नहि कयने छलीह। ओकरा ओर दोहरा बडनहि चाहैत छलीह।

ठेहुनाक बलें रेगऽवला बालककेँ कोरामे उठ। इजाबेल घर दिस चललीह। कार्मेलीनक माथसँ बोझ तऽ उतरि गेल छल। आँखि भारी भऽ रहल छलैक, आँधरिते ओ गाढ़ नीनमे हेरा गेलीह।

दूरसँ किछु कोलाहल-सुन सुनाइ देलक। कार्मेलीन चौंकि कऽ जागि उठलीह। ई कानब-पीटव केहन? ई तऽ इजाबेल अछि। पड़ोसमे तऽ... हमरा इजाबेल बजा कियाक रहल अछि....

“कार्मेलीन दौड़, जल्दी आ।”

कार्मेलीनक करेजा फाटऽ लागल, आखिर भेल की ? भगवान करय बेलिन्दा ठीक-ठाक होय। बुखारमे कमजोर बनल कार्मेलन गिरैत-पड़ैत दौड़लीह।

एड़ोसिनेसभ पहिने पहुँच चुकल छलीह! बच्चा काठ भऽ चलल छल! अध खुजल आँखि... बतेबाक जरूरतै नहि छल जे ओ चलि बसल छल।

दूध पीयेलाक बाद बच्चा सुति गेल छल। इजाबेल ओकरा खाटपर राखि बाहर दिस बैठकऽ कपड़ा सीअऽ लागल छलीह। बेलिन्दा आओर आयडा अंगनामे खेलमे मगन छलीह। बच्चा सोतेयेमे गुड़कि गेल छल। जगलापर खाटसँ नीचा पड़ल रहल। क्यो नहि जानलक, नहि देखलक। इजाबेल निश्चित छलीह जे ओ सुतल अछि।<sup>10</sup>

कार्मेलीनक अंत परिवार-समाजक अंत कोना होइत अछि से निम्न पाँतिसँ बुझल जा सकैत अछि-

“हैं! तऽ अखन लिख दहीन”, सहज भावसँ इजाबेल कहलनि।

कार्मेलीनकेँ खराब लगलनि। की इजाबेल नहि कहि सकैत छलीह, ताँ निश्चिन्त भड़कऽ चलि जो। एतऽ सब किछु देखबाक लेल हम छी। ई अपेक्षित जवाब इजाबेलसँ नहि पाबिकऽ आब कार्मेलीन अपन हृदय खोलि देलनि। ओकर समर्थन कऽ इजाबेल कहलनि, “तऽ तों जरूर जो। बेलिन्दाक कनेको चिन्ता नहि कर, हम सब किछु देख लेबा।” आओर एहि आश्वासनपर कार्मेलीन चलबाक तैयारी कयलीह। आब तऽ जेबाक अछि- मात्र एक बरिसक लेल। कमाकऽ घुरि एबाक अछि। बादमे बेलिन्दाक पढ़ाई ‘बी.ए.’, ‘एम.ए.’ जतेक चाहय, पढ़ि ले। फेर नीक रान वर-डाक्टर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट...।

“मायऽ S S S”, बेलिन्दा दौड़ल एलीह। अखन क्लासँ घुरल छलीह। “माय, काकी कहैत छलीह, ताँ कुवैत चललीह। ई सत्य अछि माय?”

“हैं, बेटी, मुदा एहि बेर तुरत घुरि जायब एक बरिसमे।” कार्मेलीन समझौलनि।

“नहि, नहि, माय। जड़हें नहि। हम एमरी फेल नहि हयब।” बेलिन्दाक शब्दसभकेँ सुनि कार्मेलीनक हृदय भरि आयल। कोन भावनामे डूबिकऽ बाजि रहल अछि बेलिन्दा.....। कतेक स्नेह अछि ओकरा हमरासँ। फेल भेल छहीन तखन बेचारीकेँ लगलनि जे हम खराब मानि गेलौ।

नहि ताँ फेल नहि हेबहीन बेटी। हम भगवानसँ मनावैत छी जे पास होइतहि तोरा कॉलेजमे भेजबाक लेल हम स्वयं चलि आयब.... नहि माय, हम कॉलेज नहि जायब। हम सोचलहुँ, आब तौ कतौ नहि जेबहीन। हम आब पैघ भऽ गेल छी। आब हम स्वयं कमायब। हम स्वयं कुवैत जायब।

कार्मेलीनके कानपर विश्वास नहि भऽ रहल। जाहि छलनि कुवैतक छँह धरि बेलिन्दापर नहि पड़ि पाबय, ताहि दुआरे प्रार्थना करैत छलीह, ओकर फोटो धरि क्यो अरबी नहि देखय, तँ ओकरा झपटि लेने छलहुँ.... आइ फादर हमर मजाक उड़ौलनि आओर पूछलनि, “ताँ किएक नहि जाइत छीहीन कुवैत....? तखन हम सोचलहुँ, आब मैट्रिक भऽ गेलाक बाद....।” बेलिन्दा एतेक उताहुलापनसँ बाजि रहल छलीह जे कार्मेलीनक कनपट्टी गरम भऽ चलल।

हम पासपोर्ट बनवा लेब आओर तोरे जकाँ कुवैत जायब। तोरे जकाँ खूब कमायब....” तखने बेलिन्दाक गालपर कडगर थापड़ पड़ल.....<sup>11</sup>

कोंकणी भाषाक प्रतिष्ठित साहित्यकार दामोदर माउजो केर कार्मेलीन उपन्यास साहित्य अकादेमीकेँ पुरस्कृत कृति अछि। नारी संवेदनाक हृदयदर्शी कथानक एहि उपन्यासक विशेषता थिक। एहि उपन्यास केर मैथिली अनुवाद कयलनि डॉ. महेन्द्र नारायण राम। मैथिली अनुवादक एहि कृतिमे भारतीय उपन्यास साहित्यकेँ एक महत्वपूर्ण योगदान मानल गेल अछि आ तँ एहि अनुवादकेँ सेहो अनुवाद पुरस्कारक कोटिमे राखि डॉ. रामकेँ अनुवाद पुरस्कारसँ समलंकृत कयल गेल अछि। डॉ. रामक अनुवाद कलामे सजीवता अछि। ओ भाषा एवं भावक तरलता केँ बनौने रखलनि अछि। ई अनुवाद भावानुवाद बेसी अछि, शब्दानुवाद कम।

#### संदर्भ :-

1. डॉ. महेन्द्र नारायण राम द्वारा साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करबाक काल चेन्नई मे देल हुनक वक्तव्यक अंश
2. खुटौना के नीलकमल : सं. अश्विनी कुमार आलोक शब्द प्रकाशन दिल्ली- 2016, पृ. 128
3. वएह
4. कार्मेलीन : अनुवादक- डॉ. महेन्द्र नारायण राम साहित्य अकादमी, दिल्ली- 2010, पृ. 134
5. वएह, पृ. 205
6. वएह, पृ. 75
7. कार्मेलीन (मैथिली अनुवाद) : डॉ. महेन्द्र नारायण राम साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2010, पृ. 18-19
8. वएह, पृ. 22
9. वएह, पृ. 61
10. वएह, पृ. 135
11. वएह, पृ. 216